भाकृअनुप- राष्ट्रीय पशुरोग जानपदिक एवं सूचना विज्ञान संस्थान
ICAR- National Institute of Veterinary Epidemiology and Disease Informatics
पोस्ट बॉक्स 6450, यलहंका, बेंगलुरु 560064, कर्नाटक

शूकर ज्वर (क्लासिकल स्वाइन फीवर)

शूकर ज्वर घरेलु एवं जंगली सुअरों मे होने वाला अत्यधिक सासांर्गिक एवं आर्थिक महत्त्व का विषाणु जनित रोग है जिसे शूकर विशेचिका, शूकर महामारी, शूकर मियादी ज्वर भी कहते है।

संचरण

- संदुषित कच्चा या अधपका घरेलु अपशिष्ट और मांस के बने भोजन के उपभोग से
- संदुषित सतह और वस्तु के चाटने और चबाने से
- वायुसाल द्वारा एक बेडे से दूसरे बेडे और एक पशु से दूसरे पशु तक
- स्वस्थ शूकर संक्रमित शूकरो के संपर्क मे आने पर
- संसर्ग एंव कृत्रिम गर्भाधान के समय संक्रमित या संदुषित वीर्य के द्वारा
- गर्भकाल के दौरान संक्रमित मादा शूकर से अपने बच्चो को

लक्षण

- तेज बुखार (105°F)
- पेट पुट्ठों और कान की त्वचा पर लाल चकत्तों का बनना
- उपांगो, पेट, जांघ के भीतरी हिस्सो, कान और पुंछ में रक्तस्राव
- पशुओ का एक दूसरे से सटकर क्षुंड बनाना
- कमजोरी, सुस्ती
- नेत्रश्लेष्माशोथ
- भोजन मे अरुचि
- दस्त या कब्ज
- गतिविभ्रम, कपकपी और विखरित चाल
- सामान्यत: मृत्यु एक से तीन सप्ताह मे हो जाती है

नियंत्रण

- संक्रमित और संदेह संक्रमित बेडो में लोगो के आवागमन पर रोक लगानी चाहिए
- शूकर या शूकर के किसी उत्पाद की आवाजाही को स्वीकृति नही देनी चाहिए
- सभी संक्रमित वस्तुओं और संक्रमित पशुओ के संर्पक मे आए पशुओ को मानवीय ठंग से वध करना चाहिए
- पशुशव, पशुउत्पाद और बिछावन को जरूरी रूप से जला देना चाहिए या पर्याप्त मात्रा मे चूने के साथ गाड देना चाहिए
- बेडो में पुन: पशु तब तक नही लाना चाहिए जब तक कि उचित सफ़ाई और विसंक्रमण समाप्त ना हो जाए
- यदि टीको का इस्तेमाल करना हो तो केवल स्वस्थ एवं असंक्रमित शूकरो पर ही करना चाहिए

*****

संकलित और संपादित
डॉ.एस. एस. पाटील , डॉ. अवधेश प्रजापति, डॉ. योगीशराध्या आर., डॉ. जी. एस. देसाई, डॉ. जगदीश हीरेमठ, डॉ. जी. गोविन्दराज

प्रकाशक
निदेशक
भाकृअनुप- राष्ट्रीय पशुरोग जानपदिक एवं सूचना विज्ञान संस्थान, पोस्ट बॉक्स-6450, यलहंका, बेंगलुरु-560064, कर्नाटक
फोन: 080-23093110, 23093111 फैक्स: 080- 23093222, वेबसाईट: www.nivedi.res.in, ईमेल: director.nivedi@icar.gov.in

2016